बेईमान
(Beiman)

Dr. Waseem Siddiqi
डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8Th Road North
Ahmadi.61008
Kuwait

किस क़दर खूबसूरत मूर्तियाँ हैं। जावेद उन मूर्तियों को देखकर ठिटुक कर रूक गया जिसको एक बच्चा फुटपाथ के किनारे खड़े होकर बेच रहा था। वह मूर्तियाँ सब एक ही तरह की थीं इन्सान का एक बच्चा अपनी माँ की छाती से चिमटा हुआ यह मूर्तियाँ लकड़ी तराश तराश कर बनायी गयीं थीं। वह जितनी खूबसूरत नज़र आ रही थीं उनको बेचने वाला वह बच्चा उतना ही फटे हाल नज़र आ रहा था मैली सी बनयाइन पहने और नेकर जो अनगिनत पेवन्द के बावजूद कई जगह से फटी हुई थी। मुसव्विर अगर इस बच्चे को बैठाकर अपने कैन्वस पर उतारता तो यक़ीनन वह एक बेहतरीन शाहकार होता। वह पेन्टिगं इफ़लास और आस का एक बेहतरीन नमूना होती हांलांकि जावेद उन मूर्तियों को देखकर ठिटुका लेकिन अब उसकी तवज्जे का मरकज़ वह लड़का हो गया था। वह कुछ फ़ासले पर खड़ा होकर उसको देखने लगा जब कोई ग्राहक उन मूर्तियों की तरफ़ मुतावज्जे होता तो उस बच्चे की आँखों में एक अजीब चमक नज़र आने लगती चेहरे पर उम्मीद की हल्की सी झलक कि यह ग्राहक मूर्ती खरीदेगा और इसके बाद जब वह ग्राहक मूर्ती उलट–पलट कर वापस जाने लगता तो उसकी आँखों की टिमटिमाहट एक दम ख़त्म हो जाती। और उसके चेहरे पर थोड़ी देर पहले आयी हुई उम्मीद की झलक ग़ायब हो जाती और वह अपना मायूस और उदास चेहरा लिये हुये किसी दूसरे ग्राहक का इन्तिज़ार करने लगता और जब यह सिलसिला काफी देर तक चलता रहा तो जावेद ने सोचा उसे एक मूर्ती खरीद लेनी चाहिये उसने सोचा वह मूर्ती खरीद कर उस बच्चे पर कोई एहसान नही करेगा मूर्ती वाक़ई बहुत खूबसूरत थी।

कितने की यह मूर्ती है जावेद ने बच्चे से पूछा चालीस रू0 की बच्चे की आँखों में उम्मीद के चिराग़ फिर जल उठे।

अरे इतनी महंगी मूर्ती को देखते हुऐ चालीस रूपये ज़्यादा नहीं थे लेकिन जावेद ने सोचा तब भी मोल भाव किया जाये बच्चा 35 रूपये में मूर्ती देने को तैयार हो गया लेकिन जावेद ने 20 रूपये में कहा और यह कहकर एक दो क़दम आगे बढ़ गया उसने सोचा कि अगर बच्चा कुछ और पैसे कम नहीं करेगा तो वह मूर्ती 35 रूपये में ही ख़रीद लेगा लेकिन उसको यह सुनकर हैरत हुई कि वह बच्चा उससे कह रहा था लाईये बाबू जी 20 रूपया ही दे दीजिये।

जावेद ने 20 रूपया देकर मूर्ती ख़रीद ली 20 रूपया की तो सिर्फ़ लकड़ी ही होगी और फिर उस पर कितनी सफ़ाई से तराशा हुआ काम कितनी मेहनत से हाथ से तराश–तराश कर यह बनायी गयी होगी किस क़दर खूबसूरत मूर्ती और कितनी सस्ती बिक गयीं उसने मूर्ती के काफी कम पैसे दिये वह यही सोचता हुआ चला जा रहा था कि यकायक एक आदमी की आवाज़ से चौका यह आप ने कितने की मूर्ती ख़रीदी है वह आदमी उससे पूछ रहा था शायद वह भी ऐसी मूर्ती ख़रीदना चाह रहा था और उसकी क़ीमत का पहले से अन्दाज़ा करना चाह रहा था।

जावेद कुछ देर सोचता रहा फिर बजाये 20 रूपये के बोला 35 रूपये की ख़रीदी है। काफ़ी अच्छी मूर्ती है उस आदमी ने मूर्ती के लिये कुछ तारीफ़ी कलमात कहे फिर उस लड़के की तरफ़ चल दिया जो मूर्ती बेच रहा था

जावेद ने सोचा इतनी अच्छी मूर्ती हरगिज़ दोबारह 20 रूपये की नहीं बिकनी चाहिये। वह घर आ गया मूर्ती को अपने ड्राइंग रूम में एक मुनासिब जगह पर रख दिया।

आज जब वह सोने लेटा तो उसे नींद बिल्कुल नहीं आ रही थी रह–रह कर उसकी नज़रों के सामने मैली कुचैली बनयाइन और फटी नेकर पहने लड़के की तस्वीर आ रही थी। वह सोचने लगा कि उसने 20 रूपये में मूर्ती ख़रीद कर अच्छा नही किया सिर्फ़ 20 रूपये की हो ही नहीं सकती हो सकता है उस लड़के ने किसी मजबूरी के तहत उसे 20 रूपये में मूर्ती दे दी हो। हो सकता है उसके घर में शाम को खाने के लिये कुछ न हो और उसे अपने और अपने घर वालों के पेट के लिये कुछ न कुछ पैसे हर सूरत में घर ले जाने हों और उसने मजबूर होकर नुक़सान ही में मूर्ती बेच दी। जावेद सोचने लगा कि 20 रूपये की मूर्ती खरीद कर उसने एक बच्चे की भूक और मजबूरी का फ़ायदा उठाया और उसे रह–रह कर इसका एहसास होता रहा फिर उसने तय किया कि सुबह उठते ही वह पहली फुरस्त में 20 रूपया और उस बच्चे को दे आयेगा और फिर इस ख़्याल से इत्मिनान हुआ और पता नहीं कब उसे नींद आ गयी।

सुबह नाश्ता वग़ैरह करके फिर वह बाज़ार की तरफ़ निकल गया हालांकि वह लड़का फुटपाथ के किनारे सड़क पर मूर्तियाँ बेच रहा था और उसकी कोई बाक़ायदा दुकान नहीं थी लेकिन जावेद को उम्मीद थी कि वह लड़का वहाँ मिल जायेगा क्योंकि सड़कों के किनारे उन लोगों की भी ख़ास ख़ास जगह होती है खड़े रहने की। जावेद बाज़ार में उस जगह पहुँच गया जहाँ वह लड़का मूर्तियाँ बेच रहा था। वहाँ कोई भी नहीं था जावेद ने घड़ी देखी अभी तो बाज़ार खुलने में एक घन्टा है सारी दुकाने लाइन से बन्द थीं और वहाँ बिल्कुल सन्नाटा था जावेद ने सोचा कि वह बहुत जल्दी आ गया है ज़ाहिर है अभी दुकाने नही खुलीं तो ग्राहक कहाँ से आयेंगे। और वह बच्चा इतनी जल्दी आकर क्या करेगा वह क़रीब के चाय स्टाल पर चला गया जहाँ उर्दू और हिन्दी दोनों ही ज़बान के अख़बार लगे हुये थे। दोनों अख़बार पढ़ने के बाद उसने घड़ी पर नज़र डाली काफ़ी देर हो गयी थी अब तो बाज़ार खुल गया होगा उसने चाय के पैसे दिये और फिर वहीं पर आ गया आधे से ज़्यादा बाज़ार खुल चुका था कुछ शटर और ताले खोले जा रहे थे और कुछ अब भी बन्द थे और बाज़ार जहाँ अभी कुछ देर पहले सन्नाटा था। उस वक़्त भीड़ से भरने लगा था सब ही जेबों से और पर्सों में से रूपये जल्द से जल्द निकाल बाहर करना चाहते थे। वह बच्चा अब तक वहाँ नहीं आया था शायद आता ही हो जावेद यह सोच कर वहीं खड़ा हो गया क्योंकि अब सड़क पर खड़े होकर सामान बेचने वाले दुकानदार भी आने शुरू हो गये थे। कोई शोलापुरी चादरें बेच रहा था तो कोई कोल्हापुरी चप्पलें कोई बेन्त के मून्ढे तो कोई बच्चों के रेडीमेड कपड़े ग़रज़ इस तरह के सामान थे जावेद ने देखा जहाँ वह लड़का मूर्तियाँ बेच रहा था वहाँ एक आदमी बड़ा सा थैला लटकाये आ गया था। और अब वह अपने थैले में से उसी तरह की मूर्तियाँ निकाल निकाल कर फुटपाथ पर सजाने लगा यह तो कोई और है वह बच्चा कहाँ गया जावेद यह सोचने लगा शायद यह आदमी उस बच्चे का बाप हो लेकिन यह आदमी इतना फटे हाल नज़र नहीं आ रहा था जितना कि वह बच्चा था। जावेद ने उस आदमी से उस बच्चे के बारे में दरयाफ़्त किया उस आदमी के चेहरे पर नागवारी के आसार आ गये अरे पिल्ला बेईमान तरस खाकर रख लिया था तो हम ही को लूटने लगा।

सच है इन सड़क छाप लड़कों का कोई भरोसा नही बात क्या हुई जावेद ने पूछा अरे बाबू जी कल उसने 35 रूपये में एक मूर्ती बेची और दिये सिर्फ़ 20 एक दो नहीं पूरे 15 रू0 मार गया दुकानदार ने उस बच्चे को दो चार मुग़ल्लेज़ात और सुनाई।

अब जावेद उस आदमी को पहचान गया था यह वही आदमी था जिसने कल उससे दरयाफ़्त किया था कि उसने यह मूर्ती कितने की ख़रीदी और जावेद ने उसे बजाये 20 रूपये के 35 रूपये बताया था ताकि बच्चे को मूर्ति के अच्छे दाम मिल सकें वह बच्चा है कहाँ? जावेद ने उस आदमी से पूछा अरे उसका कोई ठिकाना हो तो

बताएँ भी क्या मतलब तुम उस बच्चे को नहीं जानते हो।

नहीं एक रोज़ ऐसे ही सड़क के किनारे मिल गया था। रो–रो कर नौकरी माँगने लगा कई रोज़ से भूका हूँ किसी गाँव से आया था उसके माँ–बाप और दूसरे भाई बहन आकाल में भूके मर रहे थे तो वह शहर नौकरी करने आ गया था। हमसे तो बाबू जी उसने यही कहानी गढ़ी थी। हमने तरस खाकर रख लिया तीन चार रोज़ तो ईमानदारी से काम करता रहा जितने की मूर्ती बेचता था हम ग्राहक से मालूम कर लेते थे क़ाफी लगन से काम करता था सोच रहे थे हमारा कोई बच्चा नहीं है उसको भी काम सिखा देंगे फिर दोनों मिलकर इस धन्धे को आगे बढ़ायेंगे तो कल उसने अपनी ख़सलत दिखा दी लेकिन हमने भी उसको इतना मारा है कि अब आइंदा कभी बेईमानी नही कर सकता हमारा तो कोई नुक़सान नहीं हुआ उसी का घाटा हुआ तीन रोज़ के उसके 15 रूपये बनते थे वह उसे दिये नही नौकरी उसकी अलग गयी वह आदमी दोबारह अपनी मूर्तियाँ सजाने लगा और अब वह ज़्यादा बात करने के मूड में नहीं नज़र आ रहा था।

जावेद के दिमाग़ में जैसे आँधियाँ चल रहीं थी। क्या हमदर्दी की थी उसने उस बच्चे के साथ उसे यक़ीन था कि यह अफ़सोस उसे सारी ज़िन्दगी रहेगा क्योंकि वह जानता था कि वह बच्चा उसे इस भरी दुनिया में दोबारह नहीं मिल सकता। जावेद वहाँ से चल दिया था एक हारे हुये जुवांरी की तरह।

.....☆.....